नौ दिवसीय कुंडात्मक श्रीराम महायज्ञ एवं संगीतमय श्रीराम कथा व संत समागम में माननीय अध्यक्ष महोदय का सम्बोधन

राम सिर्फ एक नाम नहीं हैं ..राम एकता और अखंडता के प्रतीक हैं। समाज में मर्यादा, आदर्श और संयम का नाम है राम। वे सामाजिक हैं, लोकतांत्रिक हैं, वे मानवीय करुणा हैं, वे मानते हैं – परहित सरिस धर्म नहीं भाई। यानि दूसरों की भलाई से बढकर कोई और धर्म नहीं है। राम अगम हैं, संसार के कण-कण में विराजते हैं। राम सगुण भी हैं निर्गुण भी ...तभी कबीर कहते हैं, "निर्गुण राम जपहु रे भाई"

जब किसी के पास असीम ताकत होती है, तो अहंकार आ जाता है, घमंड आ जाता है, लेकिन अपार शक्ति के बावजूद किस तरह से हम सरल रह सकते हैं, संयमित रह सकते हैं; यह हमें भगवान राम सिखाते हैं। उनका पवित्र चरित्र लोकतंत्र का प्रहरी, उत्प्रेरक और निर्माता भी है इसलिए तो भगवान राम के आदर्शों का जनमानस पर इतना गहरा प्रभाव है और युगों-युगों तक रहेगा।

श्री रामचरितमानस में कहा गया है, "निर्मल मन जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा"

जो इंसान निर्मल स्वभाव का होता है, वही मुझे पाता है, मुझे कपट और छल छिद्र नहीं सुहाते ।

राम परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश देते हैं। श्री राम का जीवन हमें अनेक संदेश देता है। रामायण में हम पढ़ते हैं कि भगवान राम हर स्थिति में अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करते हैं। जब उनके पिता, राजा दशरथ ने उन्हें 14 साल के वनवास में जाने के लिए कहा, तो राम ने स्वेच्छा से अपने पिता की आज्ञा का पालन किया, भले ही वह सिंहासन के असली उत्तराधिकारी हों। यह हमें अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने और सही काम करने के महत्व को दिखाता है, भले ही यह मुश्किल हो।

भगवान राम और माँ सीता के बीच का संबंध भारतीय पौराणिक कथाओं में सबसे अधिक पूजनीय है। एक दूसरे के लिए उनका प्यार और समर्पण अद्वितीय है। राम को आदर्श पति के रूप में दिखाया गया है जो अपनी पत्नी की रक्षा के लिए कुछ भी करेगा, और सीता को आदर्श पत्नी के रूप में दिखाया गया है जो अपने पति के सुख-दुख में साथ

देगी। उनका रिश्ता हमें किसी भी रिश्ते में आपसी सम्मान, प्यार और समर्पण का महत्व सिखाता है।

भगवान राम कर्तव्य के प्रतीक हैं, और अपने कर्तव्यों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता ही उन्हें एक श्रद्धेय व्यक्ति बनाती है। वह सिंहासन के लिए अपना सही दावा छोड़ देते हैं और अपनी सौतेली माँ के लिए अपने पिता के वादे को पूरा करने के लिए स्वेच्छा से निर्वासन में चले जाते हैं। इसी तरह, सीता एक पत्नी और रानी के रूप में अपने कर्तव्यों को अटूट भक्ति और निष्ठा के साथ पूरा करती हैं। यहां सबक यह है कि कर्तव्य हमेशा व्यक्तिगत इच्छाओं या महत्वाकांक्षाओं से पहले आना चाहिए। जब हम अपना कर्तव्य ईमानदारी और निस्वार्थ भाव से करते हैं, तो यह न केवल हमें शांति और संतुष्टि देता है बल्कि दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है।

भगवान राम सभी के साथ सम्मान और दया का व्यवहार करते हैं। वह कभी भी अपनी शक्ति या स्थिति का प्रदर्शन नहीं करते, और जरूरतमंदों की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अपनी प्रजा और यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के साथ भी बातचीत करने के तरीके में उनकी विनम्रता देखी जाती है।

रामायण हमें क्षमा की शक्ति सिखाती है। जब रावण द्वारा सीता का अपहरण कर लिया जाता है, तो राम अपने भाई लक्ष्मण को सीता को अकेला छोड़ने के लिए क्षमा कर देते हैं और उसे बचाने के लिए जाते हैं। इसी तरह, जब रावण मारा जाता है, तो राम उसे उसके कुकर्मों के लिए क्षमा कर देते हैं और सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार करते हैं।

क्षमा करना दुर्बलता की निशानी नहीं बल्कि शक्ति की निशानी है। यह हमें अपने क्रोध और आक्रोश को दूर करने और अपने जीवन के साथ आगे बढ़ने की अनुमति देता है। जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं, तो हम न केवल स्वयं को नकारात्मक भावनाओं से मुक्त करते हैं बल्कि अपने चारो ओर एक सकारात्मक वातावरण भी निर्मित करते हैं।

भगवान राम हमेशा अपने बड़ों, शिक्षकों और यहां तक कि अपने दुश्मनों का भी सम्मान करते हैं। वह सभी के साथ सम्मान और करुणा के साथ व्यवहार करते हैं। सम्मान हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिए। जब हम दूसरों के प्रति सम्मान दिखाते हैं, तो हम विश्वास और सद्भाव का वातावरण बनाते हैं।

राम ऐसे मर्यादा पुरुष हैं जिनके बालक, युवा, गृहस्थ जीवन से लेकर अंत तक संघर्ष ही संघर्ष रहा, तब भी उन्होंने मर्यादा नहीं छोड़ी। राम का यही अद्वितीय रूप जन-जन को मर्यादा, अनुशासन व वचन पालन की शिक्षा देता है।

भगवान राम हमें अपनी मातृभूमि से प्रेम का संदेश भी देते हैं। लंका विजय के उपरांत लक्ष्मण भगवान राम से लंका में ही रुकने की विनती करते हैं। परंतु भगवान श्री राम कहते हैं "जननीजन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" अर्थात मातृभूमि का महत्व स्वर्ग से भी बढ़कर है।

राम सेतु के निर्माण के समय अचानक भगवान राम के मन में यह बात आई कि यहां तो पत्थर पानी में तैर रहा है, क्यों न मैं भी एक पत्थर कहीं एकांत में चलकर समुद्र में छोड़ूं। भगवान ने एक पत्थर समुद्र में डाल दिया किंतु वह तुरंत पानी में डूब गया, तो प्रभु ने कहा कि चलो किसी ने नहीं देखा है। लेकिन वह पीछे मुड़े देखा कि हनुमान जी मौजूद हैं। कहा कि हनुमान तुम यहां कब से हो, तो हनुमान बोले प्रभु जब से आप यहां हैं। फिर प्रभु ने कहा कि पानी में डूबने वाली बात किसी को मत बताना। हनुमान ने कहा कि जिस पत्थर को आप अपने से दूर रखकर छोड़ देंगे वह तो डूब ही जाएगा।

अगर आप राम के जीवन पर गौर करें, तो पाएंगे कि वह मुसीबतों का एक अंतहीन सिलसिला था। सबसे पहले उन्हें अपने जीवन में उस राजपाट को छोड़ना पड़ा, जिस पर उस समय की परम्पराओं के मुताबिक उनका अधिकार था। साथ ही, उन्हें चौदह साल वनवास भी झेलना पड़ा। जंगल में उनकी पत्नी का अपहरण कर लिया गया। पत्नी को छुड़ाने के लिए उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध एक भयानक युद्ध में उतरना पड़ा। उसके बाद जब वह पत्नी को ले कर अपने राज्य में वापस लौटे, तो उन्हें आलोचना सुनने को मिली। इस पर उन्हें अपनी पत्नी को जंगल में ले जाकर छोड़ना पड़ा, जो उनके जुड़वां बच्चों की मां बनने वाली थी। फिर उन्हें जाने-अनजाने अपने ही बच्चों के खिलाफ जंग लड़नी पड़ी। और अंत में उन्हें हमेशा के लिए अपनी पत्नी से वियोग का दुख झेलना पड़ा।

भारतीय जनमानस में राम का महत्त्व इसलिए नहीं है, क्योंकि उन्होंने जीवन में इतनी मुश्किलें झेलीं, बल्कि उनका महत्त्व इसलिए है, क्योंकि उन्होंने उन तमाम मुश्किलों का सामना बहुत ही सहजता से किया।

उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम इसलिए कहते हैं, क्योंकि अपने सबसे मुश्किल क्षणों में भी उन्होंने खुद को बेहद गरिमापूर्ण बनाए रखा। उस दौरान वे एक बार भी न तो विचलित हुए, न क्रोधित हुए, न उन्होंने किसी को कोसा, न ही घबराए और न ही उत्तेजित हुए। हर स्थिति

को उन्होंने बहुत ही संतुलित और मर्यादित तरीके से संभाला। इसलिए जो लोग गरिमापूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, और मुक्ति के मार्ग पर चलना चाहते हैं, उन्हें राम की शरण लेनी चाहिए।

आज के युग में भगवान श्रीराम जैसी मर्यादा एवं वचन पालन दुःसाध्य तो है, पर जिसके जीवन में राम स्थित हैं, गुरु स्थित हैं, उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। राम का उच्च जीवन आदर्श हमें साहसपूर्वक, दृढ़ता से लोक व्यवस्था में अविचल बने रहने की प्रेरणा देता है।

वे धनुर्धारी राम होकर भी युग-युग के लिए प्रणम्य हैं, उपास्य और अनुकरणीय हैं। मर्यादा की सीमा-रेखाओं को कभी न लांघने वाले प्रतिपल सद्संकल्प में जीने वाले श्रीराम का व्यक्तित्व समुद्र के समान गहरा और हिमालय से भी ऊँचा है।

राम की यह सम्पूर्ण मर्यादा उनकी अपने गुरु के प्रति अगाध समर्पित श्रद्धा पर टिकी है। भगवान राम का चरित्र भी गुरुसेवा की गम्भीरता का अनुपम उदाहरण है। धर्ममार्ग के आराधक श्रीराम विष्णु के सातवें अवतार भले कहे जाते हैं, पर श्रीराम दशरथ की बड़ी रानी कौशल्या के पुत्र बनकर मनुष्य रूप में जन्म लेकर मर्यादा-आदर्श के कारण जन-जन के बीच विशेष श्रद्धास्पद है। मनुष्य रूप में लोक कल्याण का जीवन जीने के कारण शत्रु-मित्र, दुख-कष्ट, विपत्ति उन्हें भी झेलनी पड़ी। वे दो हाथ, दो पैर, दो चक्षु, एक सिर वाले मानव के निकट होकर जन-जन के प्रेरक बन गये।

राम ने जीवन में कहीं भी स्वर्ग लोक का संदेश नहीं सुनाया, अपितु उन्होंने मनुष्य को मूल्यों-नीतियों, मर्यादाओं से जोड़कर उनमें देवत्व जगाकर धरती को ही स्वर्ग समान बनाने में लगे रहे। असुर संस्कृति को नष्टकर, ऋषि-मुनियों की रक्षा करने, सज्जनों के रहने लायक सु-राज्य की स्थापना करना उनका संकल्प था। यह राम राज्य न ही देवताओं, मनुष्यों के लिए था, इसी कारण मनुष्य होते हुए भी उन्हें देवता के रूप में लोगों ने अपनाया।

श्रीराम ने मर्यादा व पुरुषोत्तमत्व की प्रत्येक क्षेत्र में रक्षा की। गौतम पत्नी अहिल्या, शबरी, निषादराजगुह, जटायु, वानरराज सुग्रीव, जाम्बवंत आदि भले अपने निजी जीवन में लाख अपावन थे, पर राम की इनसे घनिष्ठता थी। उनकी जन निकटता की इस अमर धर्मनीति के कारण ही राम कार्य से सभी लोग जुड़ते गये।

भगवान राम का जीवन, वचन और कर्म यह दर्शाते हैं कि कैसे किसी का जीवन सत्य और धर्म पर आधारित हो सकता है। उन्होंने कहा कि उनके पिता, माता, भाइयों, पत्नी, मित्रों

और शत्रुओं तथा गुरुओं के साथ संबंध यह प्रतिमान स्थापित करते हैं कि कोई आदर्श पुरुष किस प्रकार से जीवन की हर चुनौती का धैर्यपूर्वक सामना करता है तथा और सशक्त होकर उभरता है।

राम में यह देख पाने की क्षमता थी कि जीवन में बाहरी हालात कभी भी बिगड़ सकते हैं। यहां तक कि अपने जीवन में तमाम इंतजाम करने के बावजूद बाहरी हालात विरोधी हो सकते हैं। जैसे घर में सब कुछ ठीक-ठाक हो, पर अगर तूफान आ जाए, तो वह आपसे आपका सब कुछ छीन कर ले जा सकता है। अगर आप सोचते हैं कि 'मेरे साथ ये सब नहीं होगा' तो यह मूर्खता है। जीने का विवेकपूर्ण तरीका तो यही होगा कि आप सोचें, 'अगर मेरे साथ ऐसा होता है, तो मैं इससे विवेक से ही निपटूंगा, मैं संतुलन नहीं खोऊंगा।'

दरअसल, राम की पूजा इसलिए नहीं की जाती कि हमारी भौतिक इच्छाएं पूरी हो जाएं, मकान बन जाए, प्रमोशन हो जाए, सौदे में लाभ मिल जाए, बल्कि राम की पूजा हम उनसे यह प्रेरणा लेने के लिए करते हैं कि मुश्किल क्षणों का सामना कैसे धैर्यपूर्वक, बिना विचलित हुए, सहजता से किया जाए। राम ने अपने जीवन की परिस्थितियों को सहेजने की काफी कोशिश की, लेकिन वे हमेशा ऐसा कर नहीं सके। उन्होंने कठिन परिस्थतियों में ही अपना जीवन बिताया, जिसमें चीजें लगातार उनके नियंत्रण से बाहर निकलती रहीं, लेकिन इन सबके बीच सबसे महत्त्वपूर्ण यह था कि उन्होंने हमेशा खुद को संयमित और मर्यादित रखा। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने का भी यही सार है।